धर्मायण

(धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका)

मूल्य : 45 रुपये
अंक 135
आश्विन,
2080 वि. सं.

पितृ-भक्ति विशेषांक

Facsimile copy of the particular article

पितरों का श्राद्ध और तर्पण क्यों है आवश्यक?

वैश्विक स्तर पर मृत्यु के पश्चात् श्राद्ध की अवधारणा

डा. काशीनाथ मिश्र
उच्चतर माध्यमिक शिक्षक, 'विद्या भारती' अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान, सरस्वती विद्या मन्दिर, शास्त्रीनगर, मुंगेर।

भारतीय परम्परा में वेद, स्मृति तथा लोकाचार- इन तीनों में पितर की अवधारणा पर विमर्श के बाद अब हम विश्व-सभ्यता की ओर बढ़ें। यूनान, इटली, मैक्सिको, मिस्र, चीन एवं तिब्बत की बौद्ध संस्कृति, ईसाई परम्परा, यहूदियों की परम्परा, अफ्रीकी परम्परा एवं मुस्लिम समाज में भी जब हम मृत्यु, पितर तथा पूर्वजों के प्रति अवधारणा एवं उनकी स्मृति में किए गये कर्मकाण्ड को देखते हैं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि 'भस्मान्तं शरीरम्' की दुहाई देकर पूर्वज पितरों की अवधारणा का ही उच्छेदन कर देने वाले आर्यसमाजियों के सिद्धान्त सभ्यताओं के विकास के समय से चले आ रही वैश्विक मान्यताओं के विपरीत हैं। जीवित माता-पिता पितर नहीं हैं, बल्कि पितर वे हैं, जिनकी मृत्यु हो चुकी है। पितर वे हैं जो ईश्वर से लेकर हमारे बीच तक एक शृंखला बनाते हैं। उसी शृंखला को तैत्तिरीय उपनिषद् ने 'प्रजातन्तु' कहा है। पितृपक्ष में जब हम आब्रह्मस्तम्बपर्यन्त (ब्रह्मा से लेकर अपने दिवंगत पिता तक- तृण पर्यन्त) को हम सनातन धर्मानुसार जल अर्पित करते हैं तो पृथ्वी के समस्त मानव हमारे बन्धु-बान्धव स्वतः बन जाते हैं। यहीं है सनातन धर्म में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा।

मृत्यु के पश्चात् जीवन के सम्बन्ध में वैश्विक स्तर पर विभिन्न संस्कृतियों में मान्यताएँ अलग-अलग है। साक्ष्य के तौर पर भारतीय जीवन दर्शन का मूल आधार वेद एवं उपनिषदों में जन्म-जन्मान्तर की कथा, कर्म अनुरूप पूर्व एवं पश्चात् जीवन, अर्थात पुनर्जन्म, देव लोक, पितर लोक, तदनुसार, देवपूजन एवं पितृपूजन का विशद विधान है–

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥[1]

अर्थात् हे अर्जुन! मेरे और तुम्हारे बहुत से जन्म हो चुके हैं। उन सब को तुम नहीं जानता, किंतु मैं जानता हूँ।

भारतीय वाङ्मय में मृत्यु के पश्चात् जीवन के सम्बन्ध में बहुत सारे प्रमाण मिलते हैं। इससे जुड़ा पितर लोक हेतु श्राद्ध विधान का भी वर्णन है, और भारतीय संस्कृति में व्यापक रूप से मृत्यु पश्चात् द्वादश तिथि तक दैनिक श्राद्ध, फिर मासिक श्राद्ध (छाया) एवं वार्षिक श्राद्ध, शास्त्र-सम्मत विधि-विधान एवं लोकाचार अनुरूप किया जाता है। लेकिन भारतीयेतर संस्कृतियों में श्राद्ध, पिंडदान, पितरों के प्रति आस्था, तथा वार्षिक कर्म का क्या विधान होता है, यह उत्कण्ठा का विषय हो सकता है।

प्रस्तुत आलेख के माध्यम से इसी उत्कंठा का समाधान करने की प्रयास किया रहा है कि विश्व की

1. श्रीमद् भगवत गीता अ. 4, श्लोक.5

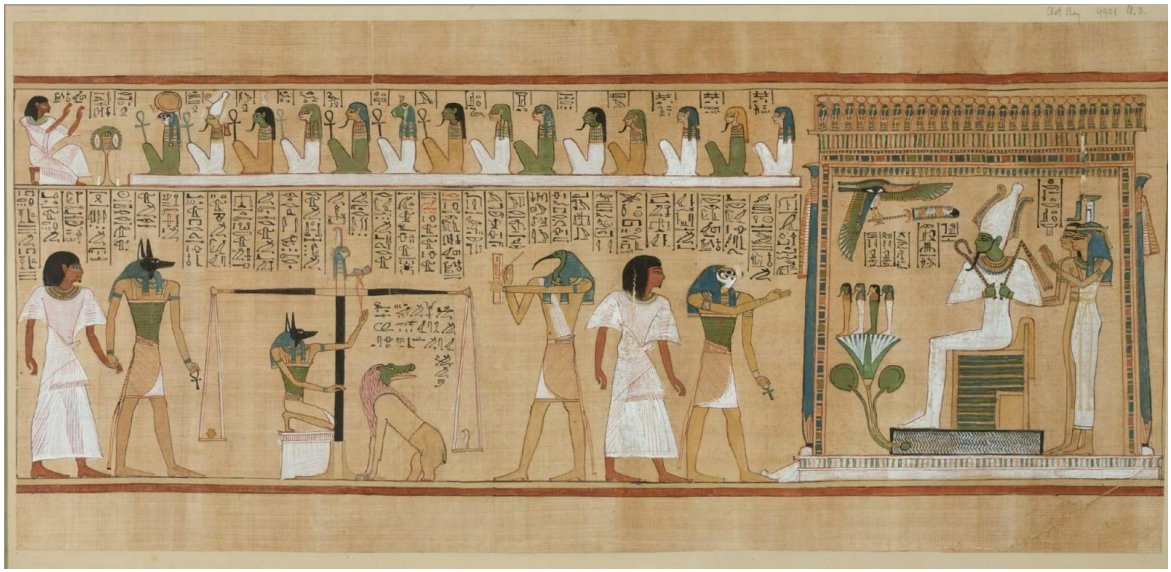

प्राचीन मिस्र की पुस्तक - 'मृत्युग्रन्थ' में यमलोक के चित्र

प्रमुख सभ्यताओं में मृत्यु के पश्चात् क्रिया की क्या अवधारणा है। मृत्यु के पश्चात् होने वाले कर्म आदि या अन्य क्रिया की झाँकी क्या है?

ग्रीस (प्राचीन यूनान) मैं मृत्यु पश्चात् क्रिया

ग्रीस को पश्चिमी सभ्यता का गुरु कहा जाता है। यहाँ प्राचीन काल से ही यह विचार रहा है कि यदि कोई आपको बचाता है तो आपको उसे वही सम्मान देना चाहिए जो आप किसी देवता को देते हैं। रोमन इतिहास में कई बार उनके उच्च पदस्थ नेताओं, जो कि राजकीय पन्थ के मुख्य पुजारी भी थे, उनके मृत्यु के पश्चात् उन्हें देवता घोषित किया गया।

उदाहरण के लिए, जूलियस सीजर (100- 44 ईसापूर्व) ने स्वयं की एक प्रतिमा को क्यूरीनस, प्राचीन रोमन युद्ध की देवी के मन्दिर में स्थापित करवाया था। कई प्राचीन समाज जैसे कि असीरियन, ईरानी और मिश्रवासियों में सर्वोच्च शासको को देवताओं या अर्ध देवता के रूप में देखा जाता था।[2]

मृतक उपासना की प्रथा, चाहे वह परिवार के सदस्य हो, राज्य के शासकगण हो, पूरे इतिहास में, कई प्राचीन सभ्यताओं में सामान्य रूप से रही है। लेकिन, लैटियम और रोम के कुलीन मृतकों के लिए मृतक के यहाँ मँहगे अन्तिम संस्कार, प्रसाद और भोज, पुनर्जन्म की उम्मीद, देवताओं के साथ जुड़ाव, स्मारक एवं प्रतिमा निर्माण, सार्वजनिक भवन आदि के साथ दान की भी परम्परा रही है।

इटली में ला फेस्टा देई मोर्टी

आज के इटली में मृत प्रियजनों के नाम, 2 नवंबर को एक उत्सव मनाया जाता है, जिससे 'ला फेस्टा देई

2. प्रो. डेनिस पी लेटन, स्कूल का लिबरल स्टडीज, अंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली "रोमन जगत में धर्म और ईसाई मत का उदय" पृ. 06

मिस्र की सभ्यता में ममी के रूप में पूर्वजों को सुरक्षित रखना।

मोर्टी' कहते हैं। यह इटली में मृतकों के दिन का संस्करण है। इसमें परिवार मृत प्रियजनों का उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होते हैं।

ऐसा माना जाता है कि मृतक बच्चे के लिए उपहार लेकर आते हैं और दावत और मौज मस्ती के दिन का आनन्द लेने के लिए परिवार के साथ रहते हैं । इस दिन मृतक को याद करके लोग जीवन और मृत्यु के चक्र के बारे में जागरूकता पैदा करते हैं और उसे प्रकृति में लय होने का जश्न मनाते हैं जिसमें वे सब मौजूद हैं। यह अमेरिका का उत्सव **'ऑल सोल्स डे'** के साथ मेल खाता है। इस उत्सव को अक्सर कैथोलिक छुट्टियों के साथ जोड़ दिया जाता है।[3]

मेक्सिको में दीया डे लॉस मुर्टोस

'दीया डे लॉस मुर्टोस', 2 नवंबर को मेक्सिको, दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्सों और उत्तरी अमेरिका में पूर्वजों के नाम मनाया जाता है। पके हुए समान, सजावट और कब्रिस्तानों की यात्रा के साथ यह एक रंगीन उत्सव है। यहाँ परिवार अपने परिजनों की कब्रों की सफाई कर सजाते हैं।

जापान में 'ओबोन महोत्सव' इसी तरह का उत्सव है। यह मृतकों का एक जापानी त्यौहार है। यह जुलाई या मध्य अगस्त में मनाया जाता है। यह सामुदायिक उत्सव एवं पारिवारिक भोज का दिन होता है, जब आत्माओं को घर वापस लाने के लिए लालटेन दिखाया जाता है।

मिस्र की संस्कृति

मृत्यु संस्कार से संबंधित मिस्रवासियों की संस्कृति में मरणोत्तर जीवन से संबंधित प्रमाण मिलता है। उनके अन्त्येष्टि अनुष्ठानों में शरीर को मम्मी बनाना, जादुई मन्त्र, कब्र में दैनिक उपयोग के समान के साथ मृतक के मम्मी निर्मित शरीर को दफनाना शामिल था। आरंभिक शाही कब्रों में पाए गए सामान, एवं मानव बलिदान, मरणोपरांत जीवन में एक उद्देश्य की पूर्ति के विचार को स्पष्ट करता है। जिन लोगों की बलि दी गई वे संभवतः

3. www.joincake.com इटली की मृत्यु परंपराएँ अनुष्ठान और मान्यताएं

चीन का पितर पर्व- मान्यता है कि हमारे पूर्वज घर के पास से गुजरते हैं, उन्हें अगरबत्ती की सुगन्धि दी जाती है।

परलोक में राजा की सेवा करने के लिए थे। कब्र की मूर्तियाँ और दीवार पर बने चित्र कुछ खास लोगों से मिलती-जुलती बनाई गई होगी, ताकि वह अपना जीवन समाप्त होने के बाद राजा का अनुसरण कर सके। उनका मानना था कि जब वे मरेंगे तो उनका शरीर उनके जीवित दुनिया के समान ही अगले जीवन में भी अस्तित्व में रहेंगे। यदि किसी व्यक्ति के जीवन काल में उचित तैयारी की जाए तो वह चीज उन्हें अगले जीवन में मिलेंगे।

मिस्र में फराओ (राजा) की मृत्यु के बाद की क्रिया बहुत ही रोचक है। वहाँ 'राजाओं की घाटी' नामक कब्रिस्तान में 2003 तक 600 चट्टान को काटकर बनाया गया कब्र पाया गया। जो लगभग 3300 बी सी तक के माने जाते हैं। एक शक्तिशाली राजवंश के अन्तिम शासक टूटनखेतन के कब्र में मम्मी को शुद्ध सोना चढ़ा कर अन्य सामानों के साथ रखा गया था। वह 26 फुट गहरा चट्टान को तराश कर बनाया गया था। एक मम्मी वाले ताबूत के अतिरिक्त दो ताबूतों में मौत के बाद के जीवन में जरूरत के समान, बोर्ड गेम्स, कांस्य का बना उस्तरा, कपड़े, अन्त वस्त्र, भोजन की थाली, डब्बे एवं शराब आदि रखा हुआ था। मम्मी वाले ताबूत, सरई और जैतून के पत्ते की माला, कमल की पंखुड़ियां, मकई के फूल आदि से सजा हुआ था। कब्र का दीवार तस्वीरों से सजा हुआ था। मम्मी पर गले का पट्टा, डिजाइनदार हार और कड़ा, अंगूठियां, ताबीज, जूते, उंगलियों के मियान, आंतरिक मुखौटा सभी चमकता हुआ शुद्ध सोने का था। लगभग 3000 वर्ष पुराने होने के बाद भी उन सामानों में चमक मृत्यु के पश्चात् शरीर में जीवन को लोग आधार मानते हैं।[4]

चीन की बौद्ध संस्कृति का अंत्येष्टि संस्कार

बौद्ध अन्त्येष्टि मृतक के एक जीवन से दूसरे जीवन में परिवर्तन का प्रतीक है। भिन्न देशों में फैले बौद्ध में दाह संस्कार पसंदीदा विकल्प है। हालांकि दफनाने की भी अनुमति है।

तिब्बत में बौद्ध लोग मृत शरीर को आकाश में अर्थात खाली स्थान पर या पहाड़ों पर काट कर या फाड़ कर छोड़ देते हैं, ताकि पक्षी जानवर उसे खा ले। रोने चिल्लाने को अनुचित माना जाता है। तिब्बती बौद्ध का मत है कि अन्तिम संस्कार के धर्म-दान, खुशनुमा माहौल, मृतकों की आत्मा को बेहतर जीवन जीने में मदद करता है।

चीनी अन्तिम संस्कार अनुष्ठानों में, व्यापक रूप से चीनी लोग धर्म से जुड़ी परंपराओं का पालन करते हैं। इसमें मृतक की उम्र, मृत्यु का कारण और मृतक की वैवाहिक और सामाजिक स्थिति के आधार पर अलग-अलग संस्कार होते हैं। चीन के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग अनुष्ठान किए जाते हैं। कई समकालीन चीनी लोग बौद्ध धर्म या ईसाई धर्म जैसे विभिन्न धार्मिक विश्वासों के अनुसार अन्तिम संस्कार करते हैं।

4विलियम ए आर, 'डिस्कवरिं ग टूट" दी सागा कंटिन्यूज हॉर्नबिल, एनसीईआरटी नई दिल्ली
5.Traditional customs.com 12th September 2010

पितरों के प्रति श्रद्धा का पर्व- 'किंग मिंग उत्सव'

इसमें दफन करना एवं दाह संस्कार करना दोनों ही रीति प्रचलित है। सामान्य तौर पर अन्तिम संस्कार समारोह 7 दिनों में किया जाता है और शोक मानने वाले मृतक के साथ, रिश्ते के अनुसार अंत्येष्टि पोशाक पहनते हैं। परंपरा अनुसार, चीन परंपरा में बड़े, छोटे की मृत्यु पर सम्मान नहीं करते हैं। वहाँ मृत्यु पर घर के दरवाजे पर सफेद बैनर लगना आम बात है। अन्तिम संस्कार के लिए दफन स्थल या दाह संस्कार स्थल पर लाने की प्रक्रिया है। इस दरम्यान आमतौर पर खाद्य पदार्थ, धूप और जोश पेपर का प्रसाद चढ़ाया जाता है। कभी-कभी भिक्षुओं द्वारा ताओवादी या बौद्ध प्रार्थनाएँ की जाती है, ताकि मृतक की आत्मा को शान्ति मिल सके और वह बेचैन भूत बनने से बच सके।

प्रत्येक वर्ष 'किंग मिंग उत्सव' में लोग अपने पूर्वजों की कब्र पर जाकर और उनकी कब्रों को साफ सफाई करके उन्हें सम्मान देते हैं। बाद की पीढ़ियों को पुर्वजों की पूजा की इस प्रक्रिया के माध्यम से भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।[5]

चीन में पूर्वजों की पूजा मुख्य रूप से पुरुष पूजा पर

कम्बोडिया में पितरों की स्मृति में- चुम-बेन

केंद्रित है। अन्तिम संस्कार के बाद परिवार अन्य मृत पूर्वजों के घरेलू वेदी पर एक पैतृक गोली स्थापित करते हैं। प्रतीकात्मक रूप से यह पूर्वजों को एकजुट करता है और पारिवारिक वंश का सम्मान करता है। प्रतिदिन वेदी के सामने धूप जलाई जाती है। उनके सामने महत्वपूर्ण घोषणाएँ की जाती है और पसंदीदा भोजन पेय पदार्थ द्विमासिक और विशेष अवसरों पर दिए जाते हैं, जैसे कि 'किंग मिंग फेस्टिवल' एवं 'झोंगयुआन फेस्टिवल'।

दक्षिण चीन में पूर्वजों की पूजा प्रचलित है। वहाँ वंश बंधन मजबूत है और पितृवंशी पदानुक्रम वरिष्ठता पर आधारित नहीं है, जबकि उत्तरी चीन में सांप्रदायिक देवताओं की पूजा प्रचलित है। पारंपरिक धर्म जो 'जिया' 'सॉन्ग' और 'झोड' राजवंशों के बाद अस्तित्व में था। वह स्वर्ग और पूर्वजों की पूजा से विकसित हुआ। इसमें स्वर्ग का आदर करना, पूर्वजों का सम्मान करना, मृतकों को विदा करने में अच्छा देखभाल करना और दूर के पूर्वजों के लिए बलिदान बनाए रखना, इस धर्म की बुनियादी धार्मिक अवधारणाएँ और भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ थी। [6]

6.www.religionfacts.com/Chinese_religion/practices/ancestor _worship, यांग और टैम्नी 2011 पृ. 280
7. कैनन 1176.3 'शोक और अंत्येष्टि' कैथोलिक विश्व का अमेरिकी सम्मेलन 7 सितंबर 20 सब 2015

चित्र : साभार https://www.prokerala.com

'ऑल सोल्स डे' का आयोजन

ईसाई परंपरा

ईसाई संप्रदायों के विभिन्न समूह अलग-अलग अन्तिम संस्कार समारोह करते हैं, लेकिन अधिकांश में प्रार्थनाएँ करना, बाइबल धर्मग्रंथों को पढ़ना, धर्मोपदेश, स्तुति एवं संगीत सुनना शामिल होता है। इसी में पारंपरिक रूप से दफन का कार्य चर्च के मैदान जैसे पवित्र भूमि पर किया जाता है। शरीर में पुनर्जीवन के विश्वास के कारण दफनाने की पारंपरिक प्रथा रही है। बाद में दाह संस्कार व्यापक रूप से उपयोग में आने लगे।

कैथोलिक विशपों के प्रमुख ने अमेरिकी सम्मेलन में कहा 'चर्च ईमानदारी से अनुशंसा करता है कि मृतकों के सबों को दफनाने की पवित्र परंपरा का पालन किया जाए। फिर भी चर्च दाह संस्कार पर रोक नहीं लगाता, जब तक कि इसे ईसाई सिद्धान्त के विपरीत कारणों से नहीं चुना गया हो।'[7]

यूरोप के कैथोलिक देशों में जो बाद में इंग्लैंड में एंग्लिकन चर्च के साथ जारी रहा, 1 नवंबर, 'ऑल सेन्ट्स डे', के दिन, अभी भी उन लोगों की विशेष रूप से पूजा करने के दिन के रूप में जाना जाता है, जिनकी मृत्यु हो गई है और जिन्हें अधिकारिक संत माना गया है।

2 नवंबर 'ऑल सोल्स डे' या मृतकों के दिन का वह दिन है, जिसमें पूर्वजों को याद किया जाता है। उस दिन परिवार अपने मृत रिश्तेदारों के लिए मामबत्तियाँ जलाने, फूल चढ़ाने और अक्सर पिकनिक या भोज मनाने के लिए कब्रिस्तान जाते हैं। 'औल सेन्ट्स डे' के पहले की शाम और हैलोज़ इव या हेलोवीन, अनौपचारिक रूप से नरक की वास्तविकताओं को याद करने, बुराई में खोई हुई आत्माओं का शोक मनाने का कैथोलिक दिन है। यह आमतौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम के कुछ हिस्सों में हल्की-फुल्की डर की भावना से मनाया जाता है।(विकीपीडिया)

संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में मृतकों को सम्मानित करने के लिए कब्र पर फूल, मोमबत्तियां, भोजन, छोटी कंकर एवं जीवन के मूल्यवान वस्तुओं को कब्रों पर साल भर रखे जाते हैं। अमेरिका में कई लोग स्मृति दिवस पर दिवंगत प्रियजनों का सम्मान करते हैं। खासकर ईस्टर, क्रिसमस, कैंडलमास और ऑल सोल्स डे के दिन, अपने रिश्तेदारों के साथ चर्च में प्रार्थना करते हैं, जिन्होंने देश की सेवा में सेवा दी थी, या मारे गए थे। उनके श्रद्धा में मेमोरियल डे का संघीय अवकाश है। 147 कब्रिस्तानों ऐसे सेवकों के लिए प्रत्येक कब्र पर अमेरिकी झंडे लगना आम बात है। पारंपरिक रूप से यह मई महीने के आखिर सोमवार को मनाया जाता है।

यहूदियों का अन्तिम संस्कार कर्म

इस्राइल एवं अन्य पश्चिमी देशों में यहूदियों द्वारा अन्तिम संस्कार एवं क्रिया कर्म का विधान कुछ अलग है। वे सब को दफनाते हैं। दफनाने के दिन से एक सप्ताह तक उनमें दुख या मातम की अवधि चलती है, जिसे शिव के नाम से जाना जाता है। इसमें मृतक के सात प्रथम श्रेणी के रिश्तेदार, अर्थात्- माता-पिता, पुत्र- पुत्री, भाई-बहन, तथा जीवनसाथी सम्मिलित होते हैं। अंत्येष्टि के

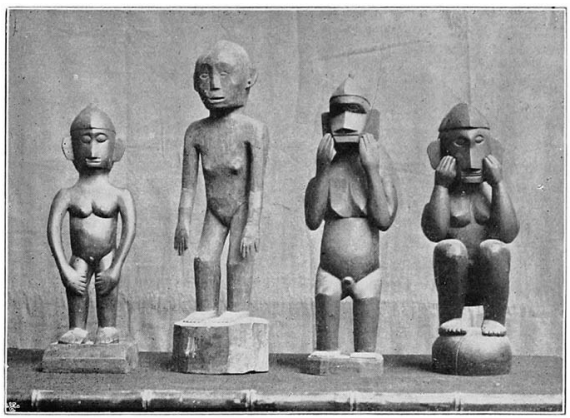

फिलीपीन्स में पूर्वजों का आत्मा की मूर्तियाँ

स्रोत : Frederic H. Sawyer - *The Inhabitants of the Philippines* (1900)

वियतनाम में में पूर्वजों के लिए अर्पण

स्रोत : By Thang Nguyen from Nottingham, United Kingdom

समय मातम में सम्मिलित होने वाले प्रथम श्रेणी के रिश्तेदार को 'केरियाह' की प्रक्रिया करनी होती है। इस प्रक्रिया में बाहरी परिधान को फाड़ देना होता है। और इस फटे हुए परिधान को शिव के अन्त तक यानी पूरे सप्ताह तक पहनना होता है। शिव के दरम्यान एक सप्ताह तक लोग स्नान करने, चमडें के जूते या गहने पहने, या सेविंग करने से परहेज करते हैं। फर्श पर बैठना प्रथा है। शिव में भाग लेने के दौरान आगंतुक परंपरागत रूप से मेजवान की भूमिका निभाते हैं। अक्सर भोजन लाएंगे और शोक संतृप्त परिवार और मेहमानों को पड़ोसेंगे। परिवार के लोग शिव काल के दौरान खाना पकाने से बचते हैं। आगंतुक इसकी जिम्मेदारी लेते हैं। 30 दिन तक श्लेशिम अवधि होती है। इसमें शादी या धार्मिक उत्सव में भाग लेना मना होता है। माता-पिता, बेटा-बेटी एक वर्ष तक उत्सव एवं संगीत समारोह में भाग नहीं लेते। यहूदी मृत्यु के सालगिरह को यार्टशेयर कहते हैं। इस अवसर पर कई रीवाज है। यथा— उपवास करना, कब्र पर मोमबत्ती जलाना, मृतक के नाम आराधनालय में आराधना करवाना या कहीं कम मांस व मदिरा पीना, तो कहीं प्रथम साल भर तक कपड़े से ढके मृत्यु स्मृति पत्थर का अनावरण करना आदि।

अफ्रीकी देशों में मृत्यु अनुष्ठान

मृत्यु, अफ्रीकी जीवन चक्र के विस्तृत उत्सव का एक अन्तिम चरण है। अफ्रीका में मृत्यु को एक अनुष्ठान के माध्यम से मान्यता दी जाती है, जो मृतक को अगले लोक की यात्रा के लिए तैयार करता है। वहाँ दूसरा अन्तिम संस्कार पहले दफन के 40 दिन बाद होता है। आमतौर पर सबसे बुजुर्ग और सबसे महत्वपूर्ण लोगों को सबसे शानदार दूसरा दफन मिलता है। 'मैक्मिलन एनसाइक्लोपीडिया आफ डेथ एंड डाईंग'[8] के मुताबिक अफ्रीका में मृत्यु अनुष्ठान, मृतक की आत्मा को शान्ति एवं पूर्वजों के बीच अपना स्थान लेने के लिए है। वे मानते हैं कि मरे हुए व्यक्ति परिवार की रक्षा करते हैं। मृतक को दरवाजे के बजाय दीवार में छेद के जरिए घर से बाहर निकाला जाता है और इसके बाद छेद को बंद कर दिया जाता है ताकि वे वापस अंदर न आ सके। कब्रगाह के लिए टेढ़ा रास्ता अपनाया जाता है एवं उसे रास्ते में कांटे, शाखाएँ या अन्य बाधाएँ जैसी चीजों को फेंका जाता है, ताकि वह दोबारा घर का रास्ता न खोज ले। वहाँ की अंत्येष्टि में धार्मिक पहलू भी होते हैं, जिसका उद्देश्य मृतक की आत्मा को परलोक पुनरुत्थान या पुनर्जीवन तक पहुंचाना होता है। अफ्रीका में देम्बू समुदाय में प्रचलित

विश्वास है कि मृत संबंधियों की छाया कब्र से निकलकर परेशान करने आती है, क्योंकि उन्हें भुला दिया गया है या उपेक्षित या अप्रसन्न किया गया है। किसी आत्मा या छाया द्वारा पकड़ लिए जाने पर संकटग्रस्त व्यक्ति, बड़े अनुष्ठानिक जमघट का केंद्र बन जाता है। ठीक हो जाने पर वह छोटा चिकित्सक बन जाता है।

मुस्लिम समाज में पूर्वजों का स्मरण

मुस्लिम समाज में मृत शरीर को दफनाने के बाद मृत्यु भोज करने का नियम है। इसको चेहल्लुम के नाम से जाना जाता है। इसमें गरीब-वर्ग के लोगों को भोजन कराने का नियम है। ऐसा माना जाता है कि अगर मरने वाले की रूह को किसी नेक काम का सबाब यानी कि पुण्य पहुंचा दिया जाए तो वह उस तक जरूर पहुंचता है और फिर उसे जन्नत प्राप्त होती है। इसी कारण से चेहल्लुम का फातिहा किया जाता है। केवल मृत व्यक्ति के परिजन ही फातिहा दिला सकते हैं।

(http/:lastjourney.in)

मुस्लिम संतों के अनुसार एक व्यक्ति सिर्फ एक बार जन्म लेता है। मृत्यु के बाद उस व्यक्ति को कब्र में दफना दिया जाता है। जहाँ वह कयामत आने तक रहता है। कयामत के दिन अर्थात जब महाप्रलय होगी उस समय सभी को, जिसके शरीर को कब्र में दफनाया गया था, जीवित कर दिया जाएगा और उनके अच्छे और बुरे कर्मों का लेखा-जोखा होगा। अंत्येष्टि के पश्चात कुरान के अनुसार मानना है कि जब नेक बंदे जन्नत में जाएंगे दोबारा तब उनको याद आएगी कि पहले भी कर्म फल के बदले यही जन्नत का सुख मिला था। अब भी वही कर्मों का प्रतिफल मिला है और यह सही है जब वह दूसरी बार जन्नत में जाएंगे तो उनको कर्मों की फलस्वरूप जन्नत का सुख मिलेगा (कुरान शरीफ सूरह अल बकरा 2.25।)

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि सनातन धर्म अनुरूप एकादशा, द्वादशा, मासिक छाया, पार्वन, वार्षिक श्राद्ध तथा गया श्राद्ध जैसा कर्म विधान विश्व के अन्य देशों में नहीं किया जाता है। भले अन्य देशों में बसे हिंदू अपनी संस्कृति को जरूर अपनाते हैं, फिर भी, किसी ने किसी रूप में विश्व के सभी संस्कृतियों में पूर्वजों के प्रति श्रद्धा देखी जाती है। इसका कालखंड भिन्न हो सकता है कहीं 7 दिन, तो कहीं 2 महीने या 4 महीने हैं। वार्षिक श्राद्ध के स्थान पर किसी खास दिन अपनी संस्कृति अनुरूप, जो भी विहित है, यथा 1 नवंबर या 2 नवंबर या फिर अगस्त का कोई दिन अपनी परंपरा अनुरूप मृत पूर्वजों के भोज करते हैं, लेकिन यह निश्चित है कि लोग पूर्वजों के प्रति श्रद्धा रखते हैं।

***

श्राद्ध किसे कहते हैं?

बृहस्पतिस्मृतौ-

संस्कृतं व्यञ्जनाढ्यञ्च पयोमधुघृतान्वितम्।
श्रद्धया दीयते यस्मात् श्राद्धं तेन निगद्यते॥

बृहस्पति स्मृति में कहा गया है कि भली भाँति पकाया हुआ अन्न जिसके साथ व्यञ्जन हो, वह दूध, मधु तथा घी से युक्त हो वह श्रद्धा के साथ जहाँ अर्पित किया जाये उसे श्राद्ध कहते हैं।

हेमाद्रि, चतुर्वर्गचिन्तामणि, परिशेषखण्ड, श्राद्धकल्प, प्रथम भाग, अध्याय 10, यज्ञेश्वर स्मृतिरत्न एवं कामाख्यानाथ तर्करत्न (सम्पादकद्वय), कोलकाता, 1809 शक- 1888ई., पृ. 1039.पृ. 153.-